अतीत के झरोखे से

फैक्ट्रियों में नर-नारी सम्बन्ध

शेर सिंह

मजदूर समाचार, अगस्त 2011 अंक

जे एन एस मजदूर प्लॉट 4, सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री के मजदूरों में अधिकतर महिला हैं ..."

मजदूर समाचार, अक्टूबर 2011 अंक

जय उशिन मजदूर "प्लोट 4, सैक्टर-3, आई एम टी मानेसर स्थित फैक्ट्री में ..."

- मजदूर समाचार, मार्च 2014 अंक)

जे एन एस इन्स्ट्रुमेन्ट्स - जय उशिन मजदूर "प्लॉट 4, सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्रियों में दिल्ली के चारों तरफ, गुड़गाँव के चारों तरफ, झज्जर, रेवाड़ी, पटौदी से बसों में महिला मजदूर आती हैं। मानेसर, कासन, खोह, नाहरपुर से पैदल भी महिला मजदूर आती हैं। अन्य दिनों की भाँति सोमवार, 10 फरवरी को सुबह पौने नौ के करीब बसों से तथा पैदल पहुँची दो हजार से ज्यादा महिला मजदूर एकत्र हुई। दोनों फैक्ट्रियों में प्रवेश एक ही गेट से होता है और दोनों में ड्युटी 9 बजे से है। परन्तु 10 फरवरी को 9 बजे कोई महिला मजदूर अन्दर नहीं गई। डेढ-दो घण्टे गेट के बाहर महिला मजदूर खड़ी रही और हरियाणा के मुख्य मन्त्री द्वारा 1 जनवरी से 8100 रुपये न्यूनतम वेतन की घोषणा की बात उठाई। पुलिस।

"बसों में महिला मजदूरों के साथ सीनियर स्टाफ भी गुप्तचर की तरह रहता है ताकि लड़कियाँ बातचीत नहीं करें। लेकिन कम्पनियों को भनक तक नहीं लगी और दो हजार से ज्यादा महिला मजदूरों ने 10 फरवरी को मिल कर कदम उठाया।

"जे.एन.एस. इन्स्ट्रुमेन्ट्स निप्पोन सेईकी, जापान और यहाँ जे पी मिण्डा समूह का संयुक्त उद्यम है। जे.एन.एस. में होण्डा, बजाज, हीरो, सुजुकी, यामाहा दुपहियों और मारुति सुजुकी तथा होण्डा कारों के ऑटो मीटर बनते हैं। जय उशिन संयुक्त उपक्रम है उशिन लिमिटेड, जापान और जे पी मिण्डा समूह का तथा इसमें वाहनों की चाबियाँ एवं दूर से बन्द किये जाते ताले बनते हैं। जे.एन.एस. का वार्षिक उत्पादन 500 करोड़ रुपये का है और जय उशिन का करीब 600 करोड़ रुपये का।

"इन फैक्ट्रियों में काम करते पुरुष मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। शिफ्ट 15 दिन में बदलती है तब एक शिफ्ट के मजदूरों को 16 घण्टे काम करना पड़ता है। फैक्ट्रियाँ 24 घण्टे, महीने के तीसों दिन चलती हैं --- जनवरी में मात्र 26 तारीख की छुट्टी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, लड़कों को 22 रुपये प्रति घण्टा और लड़कियों को 23 रुपये प्रति घण्टा।

"कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती किये पाँच-छह सौ लोग वर्दी में, इनकी तनखा बैंक खाते में, यह काम करवाते हैं और रौब झाड़ते हैं। महिला और पुरुष मजदूरों को 8-10-12 ठेकेदारों के जरिये रखा है। मजदूरों को तनखा बारे 9 तारीख को बताया जाता है पर दी 20 तारीख तक जाती है।

"नौकरी छोड़ने पर पैसों के लिये चक्कर कटवाते हैं --- बकाया पैसों के लिये महिला मजदूर गेट पर गालियाँ सुनाती हैं, चप्पल से पिटाई भी करती हैं।"

मजदूर समाचार, मई 2014 अंक

प्लॉट 4, सैक्टर-3, आई.एम.टी. मानेसर स्थित जे.एन.एस. इन्स्ट्रुमेन्ट्स और जय उशिन फैक्ट्रियों में 10 फरवरी को सुबह 9 बजे की शिफ्ट में दो हजार से ज्यादा महिला मजदूर डेढ-दो घण्टे गेट के अन्दर नहीं गई थी। गेट पर एकत्र महिला मजदूर हरियाणा मुख्य मन्त्री की 1 जनवरी से 8100 रुपये न्यूनतम वेतन की घोषणा पर अमल की बात कर रही थी। आश्वासन दे कर कम्पनी अधिकारी तब अन्दर ले गये थे।

महिला मजदूरों ने 12 मार्च को फिर कदम उठाया और 13 मार्च को पुरुष मजदूर भी उनके साथ हो लिये। के.डब्लू.एस. लाइन जिस पर हीरो दुपहियों के पैशन प्रो मॉडल के मीटर बनते हैं वह 12 मार्च को 2 घण्टे ही चली और 13 मार्च को पूरे समय बन्द रही। मजदूरों के कदम का असर प्रैस शॉप, प्रिन्टिंग, मुवमेन्ट लाइन, ऑटो लाइन पर पड़ा।

मजदूरों के कदम को विफल करने के लिये 13 मार्च को सुबह 6 वाली बसों को कम्पनी सीधे अन्दर ले गई, इस प्रकार कुछ महिला मजदूरों को जबरन फैक्ट्रियों के अन्दर ले गई। तब 9 बजे वाली बसों की महिला मजदूर बसों को आई.एम.टी. चौक पर ही रुकवा कर बसों से उतर कर पैदल फैक्ट्रियों की तरफ चली। पुरुष मजदूर पैदल पहुँचते हैं और 13 मार्च को सुबह 6 वाली शिफ्ट में वे फैक्ट्रियों के अन्दर गये ही नहीं।

कम्पनी 13 को साँय को बोली कि तनखा में एक हजार रुपये बढ़ा देंगे और अब से ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट की बजाय दुगुनी दर से देंगे --- काम पर चलो।

इस सम्बन्ध में 28 अप्रैल को जे.एन.एस. मजदूरों ने बताया कि कदम उठाने से तनखा में 1000 रुपये बढ़ा दिये हैं और ओवर टाइम का भुगतान डबल रेट से शुरू कर दिया है --- पर हाँ, पहले 12 घण्टे ड्युटी में जहाँ कम्पनी 4 घण्टे को ओवर टाइम कहती थी, अब 12 घण्टे की ड्युटी में साढे तीन घण्टे को ओवर टाइम मानती है।

रंगमंच में लोक व्याकरण के जनक हबीब तनवीर की जन्म शताब्दी

राकेश वेदा

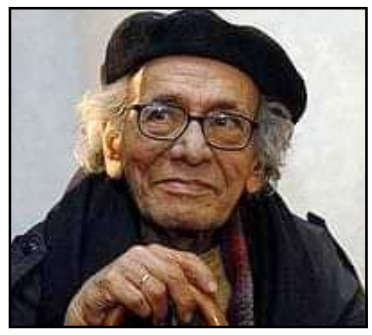

भारतीय रंगमंच में लोक को आधुनिकता से जोड़ कर एक सर्वथा नई रंगशैली के जनक हबीब तनवीर का जन्म शताब्दी वर्ष 1 सिंतबर 2022 से शुरू हो रहा है।इप्टा की राष्ट्रीय समिति अपनी प्रांतीय और जिला इकाइयों से 1 सिंतबर 2022 से 2023 तक उन के व्यक्तित्व और कृतित्व पर परिचर्चा, उनके नाटकों के मंचन और विविध तरीकों से शताब्दी समारोह आयोजित करने का आह्वान करती है। इसकी शुरुआत छत्तीसगढ़ इप्टा द्वारा आगामी 4 सिंतबर 2022 को रायपुर में आयोजित एक समारोह से हो रही है।

संक्षिप्त परिचय: हबीब तनवीर का जन्म 1 सितंबर 1922 को रायपुर में हुआ जहाँ प्रारंभिक शिक्षा के बाद नागपुर से उन्होंने बीए तथा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से 1945 में एमए किया। उसी साल वे मुम्बई चले गए फिल्मों में लेखन,गीत लिखने के साथ साथ अभिनय किया और कई वर्षों तक फिल्मों की समीक्षायें भी लिखीं साथ साथ वे इप्टा में भी शामिल हो गए। बलराज साहनी के निर्देशन में उन्होंने तेलंगाना आंदोलन पर आधारित नाटक दकन की एक रात और व्यंग्य नाटक जादू की कुर्सी जैसे चर्चित नाटकों में अभिनय किया। इप्टा की ख्वाजा अहमद अब्बास के निर्देशन में 1946 में बनी कालजयी फिल्म धरती के लाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय की कई अन्य महत्वपूर्ण फिल्मों में उन्होंने अभिनय किया।

1954 में वे दिल्ली आ गए जहां उन्होंने कुदसिया जैदी के साथ मिल कर हिंदुस्तानी थिएटर की स्थापना की जहां उन्होंने नजीर अकबराबादी की नजमों को केंद्र मे रख कर नाटक आगरा बाजार की प्रस्तुति की जो बेहद लोकप्रिय हुई।उसी दौरान 1954 में ही वे रॉयल अकैडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट्स लंदन में थिएटर के विधिवत प्रशिक्षण के लिए चले गए। प्रशिक्षण के अलावा उन्होंने यूरोप के तमाम नाट्य निर्देशकों के साथ साथ बर्तोल्त ब्रेष्ट के काम को नजदीक से देखा।1958 में दिल्ली लौटने पर हिंदुस्तानी थिएटर के साथ उन्होंने मृच्छकटिक के रूपांतरण मिट्टी की गाड़ी का निर्देशन किया और पहली बार इस नाटक में उन्होंने छत्तीसगढ़ के लोक कलाकारों से अभिनय कराया। अब वे पूरी तरह लोक की ओर मुड़ चुके थे। लोक कलाकारों को तराशने में उन्हें खासी मशक्कत करनी पड़ी और लंबे अरसे के बाद 1973 में वे अपने छत्तीसगढ़ी भाषा और शैली के नाटक गांव का नाम ससुराल और मोर नाम दामाद के रूप में सामने आए।

यहीं से हबीब तनवीर की लोकयात्रा शुरू हुई जिसमें चरन दास चोर,कामदेव का अपना,बसंत ऋतु का सपना,बहादुर कलारिन,हिरमा की अमर कहानी जैसे अनेक नाटकों के माध्यम से उन्होंने छत्तीसगढ़ी नाचा शैली और उसके कलाकारों को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलाई। इसके साथ साथ वे लगातार रंगमंच की शैली को सरलतम और सहज बनाने के प्रयोग कर रहे थे जिसका श्रेष्ठ उदाहरण उनका नाटक राजरक्तहै जो टैगोर के नाटक विसर्जन पर आधारित है, धार्मिकता, कुप्रथा, पुनरुत्थानवाद तथा हिंसा का ऐसा सार्थक प्रतिकार दुर्लभ है। स्टीफेन ज्विग की एक कहानी का नाट्य रूपांतरण देख रहे हैं नैन सहज नाट्यशैली का एक और श्रेष्ठ उदाहरण है।

लोक शैली पर लगातार काम करते हुए वे बीच बीच मे यथार्थवादी शैली में भी रंगमंच को समृद्ध करते रहे। उन्होंने प्रेमचंद की कहानी मोटेराम का सत्याग्रह का रूपांतरण सफदर हाशमी के साथ किया और जन नाट्य मंच के लिए उसका निर्देशन भी किया तथा असगर वाहत के नाटक जिस लाहौर नही वेख्या सो जन्मया ही नही की शानदार प्रस्तुति की। जहां सड़क नाटक से उन्होंने कथित विकास की पोल खोली वहीं राहुल वर्मा के नाटक जहरीली हवा को प्रस्तुत करके भोपाल गैस त्रासदी को उजागर किया। लोक के खजाने से ब्राह्मणवाद पर प्रहार करने वाले नाटक पोंगा पंडित उर्फ जमादारिन के कारण तो उन्हें कट्टरपंथियों के हमले का भी शिकार होना पड़ा। 8 जून 2009 को उन्होंने भोपाल में अंतिम सांस ली। उस समय वे वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में राइटर इन रेजिडेंस थे। उस समय मेरा भी उनके साथ लंबा आत्मीय संबंध और संवाद रहा। इप्टा की राष्ट्रीय समिति की ओर से हबीब तनवीर की जन्म शताब्दी पर उंन्हे याद करते हुए हम उनकी विरासत को आगे ले जाने के लिए संकल्पबद्ध होते हैं।

फिल्मी कहानियों से अलग दशरथ मांझी की हकीकत..

सनाउल्लाह अहमद रिजवी

महादलित समाज से आने वाले इस शख्सियत को फिल्मकारों ने अपने हिसाब से उनकी कहानी को भुनाया और करोड़ों कमाई की मगर उनका परिवार आज भी झोपड़ी में रहता है । उसी झोपड़ी में फिल्म की शूटिंग भी हुई थी । कुछ रुपये दिए और कहा कि फिल्म रिलीज के बाद 2 प्रतिशत देंगे मगर परिवार का कहना है कुछ भी नहीं दिया ।

उनकी झोपड़ी के आगे मांझी जी और महात्मा बुद्ध की मूर्तियां लगी हैं जिसे 2015 में जन अधिकार पार्टी के अध्यक्ष पप्पू यादव जी ने बनवाया था ।

उनके घर पर ही बातों-बातों में जब दशरथ मांझी जी के बेटे भगीरथ मांझी से पूछा कि फिल्म में जो लव स्टोरी , प्यार मुहब्बत दिखाया गया है वो सही है तो वो थोड़ा शर्माते हुए कहते हैं कि "भक ऐसा थोड़े होवल था उ फिलिम सब अपन मन से दिखा दिया है ,हमनी के बतइबो न किया था ।" मतलब नॉर्मल शादी हुई थी ।

फिर पूछा ये सच है कि आपकी माँ के मरने के बाद प्यार में बाबा पहाड़ तोड़ ... फिर उन्होंने बताया कि प्यार में त करबे किये लेकिन पहाड़ तोड़े समय भी माँ जिंदा रही।

मैंने पूछा कि आखिर ये प्रेरणा कहाँ से मिली थोडा डिटेल में बताईये तो कहा "ये पूरा गहलौर की पहाड़ियां देख रहे हैं कितना ऊंचा है । पहाड़ पार करने में काफी कठनाई भी होती थी और गिरने का डर भी । बीच मे थोड़ा कम ऊँचाई का छोटा सा एक खोह टाइप (दर्रा) था जिससे थोड़ा मुश्किल कर एक आदमी निकल सकता था ।

बाबा पहाड़ के दूसरे साइड डेली खेती और जलावन इकट्ठा करने जाते थे और माँ खाना-पानी ले कर जाती थी । इसी क्रम में एक दिन दर्रा पार करते हुए माँ गिर गयी , घड़ा भी फूटा और चोट भी लगी , उधर बाबा इंतजार ही करते रह गए। यहीं से उनके दिमाग में बात क्लिक हुई और दर्रा को चौड़ा करने की जुगत में लग गए ।

60 के अंतिम दशक के आसपास अधिकारियों से बात हुई मगर कोई फायदा नहीं तो अपनी दो बकरियों को वजीरगंज बाजार में बेच कर खुद ही बाजार से छेनी हथौड़ी इत्यादि सामान ले कर चौड़ा करना शुरू कर दिया । घर के खर्चा पानी के लिए अपना काम भी करते और टाइम टू टाइम पहाड़ भी तोड़ते ।

इसी क्रम में वो रास्ता चौड़ा हो जाता है तो एक स्थानीय अखबार में इनके पहाड़ तोड़ने के हौसले पर खबर छपती है और धीरे धीरे ये मशहूर होने लगते हैं ।

फिर पूछा दिल्ली कैसे गए कोई कारण था या आंदोलन वगैरह ? बेटे ने कहा "न कोई आंदोलन ई सब न था , ऐसेही खेल में गाँव के आदमी बोला के दिल्ली दूर है त बाबा कहे कित्ता दूर है एकरो नापीए लेते हैं । बाबा के दिल्ली घूमे के बड़े इच्छा थी तो पैदले निकल लिए । 2 महीना लगा था , यहीं वजीरगंज स्टेशन से चले थे । दिल्ली इंदिरा गांधी जी से मिले भी थे ।

मैंने पूछा सरकार ने कोई मदद की या नहीं तो मांझी जी के भतीजे ने बताया कि सबसे पहले बाबा को विनोबा भावे जी (भू-दान आंदोलन के जनक) ने जमीन दी तो बाबा ने और लोगों को बसाया और एक कॉलोनी टाइप बन गयी । (पुराना घर वहीं है) लालू यादव जी के काल मे बाबा जब लालू जी से मिलने गए तो गेट पर ही पुलिस ने रोक दिया तो बाबा के साथ मे छेनी हथौड़ी हमेशा रहता ही था ,गेट से लगे दूसरे साइड बाउंड्री को तोड़ने लगे । पुलिस ने रोक कर कहा बाबा ये क्या कर रहे हो तब बाबा ने कहा जब गेट से घुसे न दोगे त दूसरा रास्ता निकालना ही न पड़ेगा ? फिर बाबा को लालू जी से मिलाया जाता है । लालू जी बाबा को पहाड़ के उस साइड जिधर बाबा लकड़ी चुनने जाते थे वो जमीन 1.5 एकड़ के गरीब बाबा को दिया । आज वो ता? से घेरा हुआ है ।

बाकी नीतीश कुमार की सरकार आते ही इनको खू ख्याति भी प्राप्त हुई और सहायता भी सबसे अधिक नीतीश जी ने किया । मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी ने सबसे पहले उस घाटी को और चौड़ा कर रोड बनवाया । उनके नाम से जमीन आवंटित की गई । बाबा ने मुख्यमंत्री से हॉस्पिटल बनवाने को कहा नीतीश जी ने हॉस्पिटल के साथ थाना भी बनवा दिया ।

पास के गाँव मे एक बरसाती नदी है बाबा उसमे एकबार फंस गए नीतीश जी को बताया नीतीश जी ने उसपर पुल बनवा दिया ।

आगे बताते हैं कि अंतिम समय मे जब बाबा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी से मिलने गए तो नीतीश जी सम्मानित करते हुए उन्हें अपनी कुर्सी पर बैठा कर उन्हें 1 घंटे का मुख्यमंत्री कहा । इस सम्मान से वो अभिभूत हो गए । वो सम्मान उनके दिल से निकल न सका ।

2007 में नीतीश कुमार जी की पत्नी की मृत्यु के बाद महाभोज में गए और वहां से लौटने के क्रम में अचानक उनकी तबियत खराब हुई कुछ दिन गाँव के ही डॉक्टरों से इलाज करवाया सुधार न होने पर गया और फिर पटना भर्ती हुए , मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी ने बेहतर सुविधा के लिए दिल्ली एम्स में भर्ती करवाया और वहीं 17 अगस्त2007 में उन्होंने आखिरी सांस ली ।

उनके अंतिम संस्कार को बड़े पैमाने पर राजकीय सम्मान के तहत तोपों की सलामी के साथ किया गया।

मरने के बाद नीतीश सरकार ने उनकी याद में कटे पहाड़ के नीचे स्मृति स्थल या समाधी स्थल बनवाया और साथ मे थोड़ी दूर पर एक म्यूजियम का भी निर्माण करवाया।

अंतिम में मैंने यूं ही पूछा तब आपलोग वोट किसको देते हैं? कहने लगे नीतीश हमलोग के लिए बहुत किए हैं और एक कहावत कही (नीमक कर के याद नहीं आ रहा) और कहा हारे चाहे जीते वोट त हमनी के नीतीशवे के जाता है ।

(17 अगस्त "माउंटेन मैन" दशरथ मांझी जी की पुण्यतिथि थी ।)